और

जीवन-चरित्र

जिस में

उन महात्मा के अति मनोहर भजन, ककहरा, अलिफ़-नामा, पहाड़ा, कुंडलिया और साखी शोध कर मुख्य मुख्य अंगौं में यथाक्रम रक्खी गई हैं

और गूढ़ शब्दौं के अर्थ व संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं।

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्कस् में प्रकाशित हुआ

सन् १९०९

[११४ सफ़हा] [दाम ।=)]

सब्सक्रैबरों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी

(इस निवेदन के पृष्ठ २ का आख़िरी जुमला पढ़िये)

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नकल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हें और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है। परंतु इस सब जतन पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पुस्तकें निर्दोष हैं अर्थात उन में अशुद्धता और क्षेपक नाम-मात्र नहीं है।

॥ सूची पत्र ॥

अ

इ

उ

ए

क

ख

ग

च

ज

झ

त

थ

द

ध

न

य

र

स

ह

ज्ञ

भीखा साहब का जीवन-चरित्र

भीखा साहब जिनका घरऊ नाम भीखानंद था जाति के ब्राह्मन चौबे थे। ज़िला आज़मगढ़ के खानपुर बोहना नाम के गाँव में उन्हों ने जन्म लिया जिसे दो सौ बरस के क़रीब हुए।

बाल अवस्था ही से उन को परमार्थ और साध संग का इतना उत्साह था कि बारह बरस की उमर में घर बार त्याग कर पूरे गुरू और सच्चे मत की खोज में काशी को गये पर वहाँ कुछ न पाकर लौटे। रास्ते में पता लगा कि ग़ाज़ीपुर ज़िले के भुरकुड़ा गाँव में एक शब्द अभ्यासी महात्मा गुलाल साहब दर्शन के योग्य हैं। फिर तो यह वहाँ को दौड़े और उन से उपदेश लिया। इस हाल को भीखा साहब ने अपने एक शब्द में लिखा है— (देखो पहिला शब्द पृष्ठ १६-१७ में)

भीखा साहब अनुमान बारह बरस तक तन मन धन से अपने गुरु गुलाल साहब की रात दिन सेवा और सतसंग करते रहे। इस के पीछे जब गुलाल साहब गुप्त हुए तब इन को उन की गद्दी मिली और चौबीस पच्चीस बरस तक अपने सतसंग और उपदेश से जीवों को चेताते और परमारथ का धन लुटाते रहे। भुरकुड़ा में जब से बारह बरस की अवस्था में यह आये कहीं बाहर नहीं गये और वहीं अनुमान पचास बरस की उमर में शरीर त्याग किया। भुरकुड़ा में इन की समाधि और इन के गुरू गुलाल साहब और दादा-गुरू बुल्ला साहब की समाधें मौजूद हैं जहाँ बिजय-दसमी पर बड़ा भारी मेला होता है।

भीखा साहब के पंथ में बहुत से लोग हैं और अकेले भुरकुड़ा गाँव और बलिया ज़िले के बड़ागाँव में और उन के आस पास उस मति के कई हज़ार अनुयायी रहते हैं।

हम ने इन दोनों स्थानों और दूसरी जगहों और ग्रंथों से भीखा साहब के जन्मने और गुप्त होने का समय जानना चाहा पर कहीं ठीक ठीक पता न लगा। परंतु एक हस्त-लिखित पुस्तक भुरकुड़ा में मौजूद है जिसे लोग कहते हैं कि गुलाल साहब ने भीखा साहब की मौजूदगी में लिखा और दोनों का छाप बहुतेरे पदों में मिलने से इस कथन का प्रमान होता है। इस ग्रंथ में लिखा है कि उसका बनाना बिक्रमी सम्वत १७८८ में आरंभ हुआ और फागुन सुदी ५ बृहस्पतिवार सम्वत १७९२ को समाप्त हुआ। इस हिसाब से भीखा साहब के जन्म का साल अनुमान सम्वत १७७० और गुप्त होने का १८२० ठहरता है।

भीखा साहब की पूरी साध गति थी जैसा कि उस भेद से जो उन्हों ने अपनी बानी में दिया है प्रगट होता है। इन के कई एक ग्रंथ हैं जिन में से एक का नाम राम-जहाज है। यह एक भारी पुस्तक है।

भीखा साहब के सम्बन्ध में बहुत सी लीला और चमत्कार मशहूर हैं जिन सब के लिखने की यहाँ आवश्यकता नहीं है क्योंकि कितनी कथायें लोग महात्माओं के गुप्त होने पर गढ़ लेते हैं जिनसे पूरे महात्मा और भक्तजन की महिमा समझदारों की दृष्टि में रत्ती भर नहीं बढ़ती अलबत्ते मामूली आदमी वाह वाह करते हैं। तौ भी दो चार कथा दृष्टांत की तरह यहाँ लिखी जाती हैं।

(१) एक बार कीनाराम औघड़ जिनको सिद्धि शक्ति प्राप्त थी इनसे मिलने गये और पीने को मदिरा माँगी। भीखा साहब ने जवाब दिया कि हमारे यहाँ मदिरा का कहाँ गुज़र है इसपर कीनाराम ने ऐसा खेल दिखलाया कि भीखा साहब के स्थान पर जहाँ जहाँ पानी था सब मदिरा हो गया। थोड़ी देर पीछे भीखा साहब ने पानी पीने को अपने एक सेवक से माँगा उसने डर कर उत्तर

दिया कि सब पानी मदिरा हो गया है। भीखा साहब ने कहा लावो वह सब जल है, जब लाया गया तब पानी हो गया।

(२) एक नंगे साधू पहुंचे और खाने को मथुरा का पेड़ा और पीने को तिरबेनी का जल माँगा। भीखा साहब ने कहा कि यह तो नहीं है तब साधू ने अपनी सिद्धि शक्ति से बहुत सा पैदा कर दिया और सब को बाँटा पर भीखा साहब के लिये न बचा। भीखा साहब ने कहा कि हम को भी दो पर सिद्ध ने लाख सिर मारा पेड़ा और जल उनके लिये न आ सका और उसका अंडकोष बेहद बढ़ गया। तब भीखा साहब के चरनौं पर गिरा और वह अंग ठीक हो गया जिस पर भीखा साहब की आज्ञानुसार सिद्ध ने बस्त्र धारन किया।

(३) एक भेष आये। रात को उनके खाने को लाया गया तो कहा कि हम दिन ही को खाना खाते हैं इस पर भीखा साहब ने ऐसी मौज की कि थोड़ी देर को दिन का प्रकाश हो गया।

(४) एक मौनी बाबा सिंह पर सवार हो कर उनसे मिलने आये। उस समय भीखा साहब एक भीत पर बैठे दातन कर रहे थे, जब बाबाजी के इस ठाठ से आने का हाल कहा गया तो बोले कि हमारे पास तो कोई सवारी नहीं है और साधू की अगवानी ज़रूर है, चल भीत तूही ले चल। इस पर वह दीवार चली। मौनीजी यह देख कर चरनौं पर गिरे।

ऐसी कितनी कथायें कही जाती हैं पर वह सब भीखा साहब सरीखे साधगुरु के लिये महा तुच्छ हैं।

एक बंशावली वृक्ष भीखा साहब के गुरु घराने का छापा जाता है जिसे बड़ागाँव ज़िले बलिया के महंत ने हमें कृपा कर के दिया था। उस से जान पड़ता है कि जगजीवन साहब जिनकी अति कोमल और दीनतामय बानी हम छाप चुके हैं भीखा साहब के गुरु के गुरुभाई थे और पलटू साहब (जिनकी बानी भी छप चुकी है)

के भीखा साहब दादा-गुरू थे। यह बंशावली प्रमानिक है जिसकी तसदीक़ भुरकुड़ा से भी कर ली गई है—
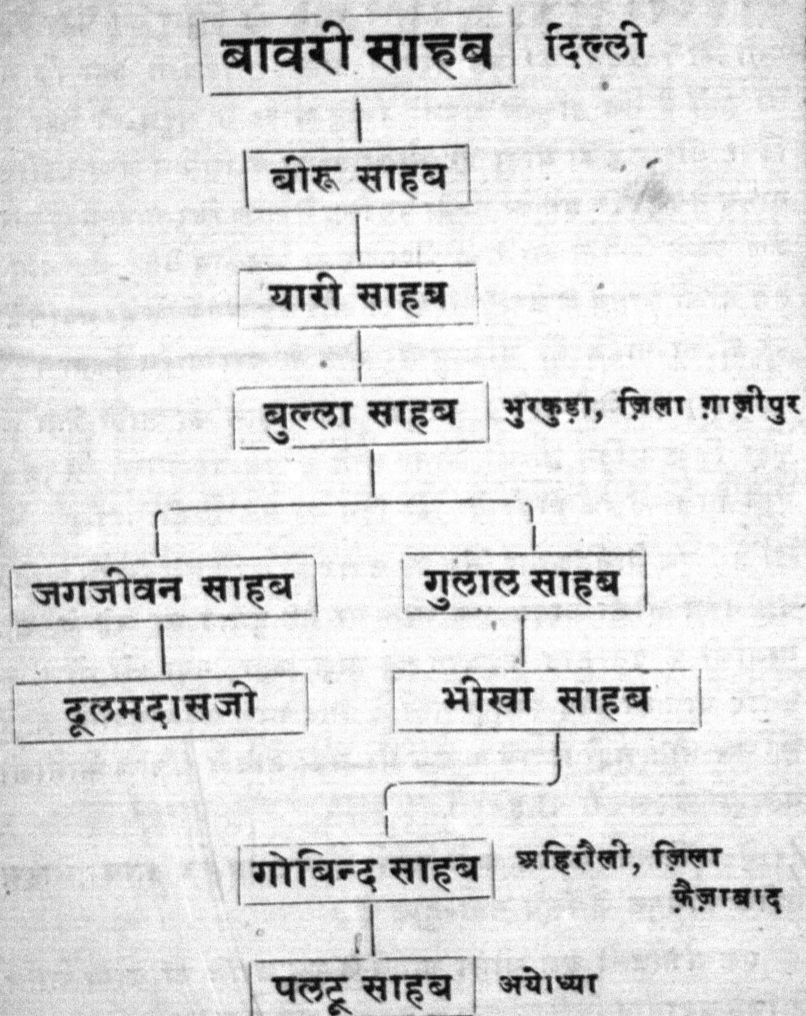
भीखा साहब की शब्दावली

॥ उपदेश ॥

॥ शब्द १ ॥

मन तू राम से लै लाव ।
त्यागि के परपंच माया सकल जगहिं नचाव ॥ १ ॥
साँच की तू चाल गहि ले झूंठ कपट बहाव ।
रहनि सों लौ लीन ह्वै गुरु-ज्ञान ध्यान जगाव ॥ २॥
जोग की यह सहज जुक्ति बिचारि कै ठहराव ।
प्रेम प्रीति सों लागि के घट सहजहीं सुख पाव ॥ ३
दृष्टि तें आदृष्टि देखो सुरति निरति बसाव ।
आत्मा निर्धार निर्भौ बानि अनुभव गाव ॥ ४ ॥
अचल अस्थिर* ब्रह्म सेवो भाव चित अरुझाव ।
भीखा फिर नहिं कबहुं पैहौ बहुरि ऐसो दाव ॥ ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

भजि लेहु आतम रामै,
मन तुम भजि लेहु आतम रामै ॥ टेक ॥
यह माया बिस्तार खड़ा है, जग परपंच हरामै ॥ १ ॥

---

*स्थिर ?

सुत कलित्र* धन बिषै सुक्ख दुख। अंत माया
केहि कामै ॥२॥
दिन दिन घरि पल समय जातु है। तन काँचो
सुठि[†] खामै[‡] ॥३॥
हाड़ मास नस रुधिर को बेठन। रूप रँगीलो चामै ॥४॥
जा को बेद बेदांत प्रसंसत। घट घट केवल नामै ॥५॥
सतगुरु कृपा गयो कोउ तहवाँ। जहवाँ छाँह न घामै ॥६॥
जहँ जैसो तहँ तैसो साहब। लाल गोर कहुं स्यामै ॥७॥
अवलोकहु[§] हरि रूप बैठि के। सुन्न निरंतर धामै ॥८॥
व्यापक ब्रह्म चहूं जुग पूरन। है सब में सब तामैं[‖] ॥९॥
आगे पाछे अर्ध उर्ध जोइ। सोइ दहिने सोइ बामै ॥१०॥
भीखा भजन को दाँव बनो है। ईहै दम इह दामै ॥११॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तुम राम नाम चित धारो।
जो निज कर अपनो भल चाहो, ममता मोह बिसारो ॥१॥
अंदर में परपंच बसायो, बाहर भेख सँवारो।
बहु बिपरीति कपट चतुराई, बिन हरि भजन बिकारो ॥२
जप तप मख[¶] करि बिधि बिधान, जत तत
उदवेग निवारो।
बिन गुरु लच्छ सुदृष्टि न आवे, जन्म मरन दुख भारो ॥३॥

*स्त्री। [†]सुन्दर। [‡]बेकाम। [§]देखो। [‖]तिस में। [¶]यज्ञ

ज्ञान ध्यान उर करहु धरहु दृढ़, सब्द सरूप बिचारो।
कह भीखा लौलीन रहो उत, इत मत* सुरति उतारो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

जग के करम बहुत कठिनाई।
तातें भरमि भरमि जहँडाई† ॥ टेक ॥

ज्ञानवंत अज्ञान होत है, बूढ़ करत लरिकाई।
परमारथ तजि स्वारथ सेवहि, यह धौं कौनि बड़ाई ॥१॥
बेद बेदान्त को अर्थ बिचारहिं, बहु बिधि रुचि उपजाई।
माया मोह ग्रसित निस बासर, कौन बड़ो सुखदाई ॥२॥
लेहि बिसाहि‡ काँच को सौदा, सोना नाम गँवाई।
अमृत तजि बिष अँचवन लागे, यह धौं कौनि मिठाई ॥३॥
गुरु परताप साध की संगति, करहु न काहे भाई।
अंत समय जब काल गरसि है, कौन करौ चतुराई ॥४॥
मानुष जनम बहुरि नहिं पैहौ, बादि§ चला दिन जाई।
भीखा कौ मन कपट कुचाली, धरन‖ धरै मुरखाई ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

देखो निज सरूप हरि केरा, तातें कार कौतुकी तेरा ॥टेक॥
प्रभु में संत संत में प्रभु हैं, या में फार न फेरा।
केवल आतम राम बिराजत, निकटहिं जिय हिय हेरा ॥१॥
मानुष जन्म याहि करि पायो, भजि ले नाम सबेरा।
बाल कुमार जुवा बिरधापन, होइ होइ जात अबेरा ॥२॥

*नहीं। †ठगाते हैं। ‡मोल। §मुफ्त। ‖टेक।

चेतन प्रान अपान सो जड़, उदान ब्यान महँ डेरा ।
कहत है और करत है औरै, बलकत* फिरत अनेरा† ॥३॥
यह मन कठिन कठोर अपर्बल, कियो सकल जग जेरा‡ ।
माया मोह में फँसि गयो, भयो सुत कलित्र§ धन चेरा ॥४॥
आयू‖ घटत बढ़त तन देखत, लाभ लोभ तन घेरा ।
आवत जात चरख¶ चौरासी, करम न करत निबेरा ॥५॥
सिर पर काल बसत निसु बासर, मारत तुरत चबेरा** ।
काहे न बाँधहु भव उतरन कहँ, सत्त सब्द को बेरा†† ६ ॥
कहत हैं बेद बेदांत संत पुनि, गुरू कान महँ टेरा ।
भीखा भाग बिना नहिं देखत, निकटहिं दीप‡‡ अँधेरा ॥७

॥ शब्द ६ ॥

मन मानि ले रे तू कहल हमार ।
फिरि फिरि मानुष जनम न पैहौ, चौरासी अवतार ॥टेक॥
पागा माया बिषै मिठाई, काम क्रोध रत सोई ।
सुर नर मुनि गन गंधर्ब कछु कछु, चाखत है सब कोई ॥१॥
त्रिबिधि ताप को फंद परो है, सूझत वार न पारा ।
काल कराल बसै निकटहिं, धरि मारि नर्क महँ डारा ।
संत साध मिलि हाट लगायो, सौदा नाम भराई ।
जो जा को अधिकार होत तिन, तैसी बस्तु मोलाई ॥२

* उबलता । † बेफ़ायदा । ‡ ज़ेर, परास्त । § स्त्री । ‖ उमर । ¶ चक्र ।
** थप्पड़ । †† बेड़ा । ‡‡ चिराग़ ।

सब सक्ती धन धाम सकल लै, सरनागति में डारा ।
समझो बूझि बिचारि उतारो, अपने सिर को भारा४
जोग जुक्ति कै परचो पैहौ सुरति निरति ठहराई ।
अर्ध उर्ध के मध्य निरंतर, अनहद धुनि घहराई॥५॥
सुरति मगन परमारथ जागै, करम होहि जरि छारा*।
ज्ञान ध्यान कै खानि खुलै जब, तब छूटै संसारा॥६॥
भक्ति भाव कल्पद्रुम छाया, ताप रहै नहिं देई ।
चारि पदारथ अज्ञाकारी, पर† सों कबहिं न लेई ॥७॥
राम नाम फल मिलो जाहि को, प्रेम सुधा रस धारा ।
पुलकि पुलकि मन पान करो तुम, निस दिन बारम्बारा८
गुरु परताप कहाँ लगि बरनों, उक्ती एक न आई ।
रसना जो कहिं होयँ सहसदस, उपमा गाय न जाई ॥९॥
आतम राम अखंडित आपै, निज साहब बिस्तारा ।
भीखा सहज समाधी लावो, अवसर इहै तुम्हारा ॥१०॥

॥ शब्द ७ ॥

समयजून आवन सोइ आई। मन कहहू तें नहिं पतियाई१
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन । देहि
अवध नियराई ॥२॥
मूरख तदपि नाहिं चित चिंता । मांनो करतल‡
भै अमराई§ ॥३॥
सुर नर मुनि गन गंधर्ब दानव। काल करम दुख पाई ४

---

* राख † पराया या दूसरा। ‡ मुट्ठी। § समझता है कि न मरना अपने हाथ में है।

ब्रह्मा बिस्नु सीव सनकादि दे* । प्रभु डर को न डेराई ५
अमर चिरंजिव लोमस समता† । तिन पर त्रास जनाई ६
भीखा निर्भय राम सरन इक । का किये
बहुत सिधाई‡ ॥७॥

॥ शब्द ८ ॥

जग में लोभ मोह नर भूलो ।
तातें नेकु दृष्टि नहिं खूलो ॥टेक॥

नीचे ऊँचे महल उठावहिं, जित पसार धन दर्बा ।
सो तैसो गुजरान दिना दस, अंत काल बसि सर्बा§ ॥१॥
ब्रह्म बोलता छाँड़ि करतु है, लोक बेद कै आस ।
ज्यों मृग सँग कस्तूरी महकै, सुंघत फिरै बहु घास ॥२॥
काम क्रोध अरु मोर तोर में, मनुआँ भटका खात ।
ज्यों केहरि बपु छाँहि कूप लखि, करत आपनी घात‖ ॥३
केवल ब्रह्म सकल घट ब्यापक, घाटि कहूं नहिं पूरा ।
आतम राम भर्म के बसि परि, यह आचरज जहूरा ॥४॥
जोग जग्य तप दान नेम करि, चाहत राम को भेंटा ।
जल पत्थल करि हरि आराधहिं, बाँझ खेलावहिं बेटा ५
देवता पितर भूत गन पूजहिं, धरे सो तन बिकरारी ।
जोति सरूप न आपा चीन्हत, महा सो अधम अनारी ६
भीखा स्वारथ खेत बोवायो, बीज पुन्न अरु पाप ।
जो अघाय सो भोग करत है, करता करम को बाप ॥७॥

---

* आदिक । † लोमस ऋषि सरीखे जो अमर थे । ‡ सिद्धाई ।
§ आख़िर में सब काल के बस में पड़ेंगे । ‖ जैसे शेर अपने रूप की परछाईं कुए में देख कर कूद पड़ा और जान गँवाई ।

॥ शब्द ९ ॥

या जग में रहना दिन चारी। तातें हरिचरनन चित वारी १
सिरपर काल सदा सर* साधे। अवसर परे तुरतहीं मारी २
भीखा केवल नाम भजे बिनु। प्रापति कष्ट नरक भारी ॥३

॥ शब्द १० ॥

मन तुम राम न भजहु सबेरो।
पहर दुपहर तीसरे पहरे, होइ होइ जात अबेरो ॥ १ ॥
जागहु खड़े होहु जीवत माँ, सो केवल हित तेरो।
भ्रम घूंघट पट खोलि बिचारी, सहजहिं मेटि अँधेरो ॥२॥
सतगुरु नैन सैन कै परिचै, होत न लागत देरो।
अचरज महा अलौकिक रचना, देखत निकटहिं नेरो ॥३॥
सहज समाधि कै चाह करहु तब, आपा परे निबेरो।
खोज खोज कोउ अंत न पायो, सुर नर मुनि बहुतेरो ॥४॥
तुरिया सब्द उठत अभि† अंतर, सोहं सोहं टेरो।
पूरब लिखो अछर अनमूरति, आपुहिं चित्र चितेरो ॥५॥
सर्ब जहाँ लगि रूप तुम्हारो, जल थल बन गिरि हेरो।
कह भीखा इक धन्य तुही है, पटतर‡ द्यों केहि केरो ॥६॥

॥ शब्द ११ ॥

जो कोउ राम नाम चित धरै।
तन मन धन न्योछावर वारै, सहज सुफल फल फरै ॥१॥
गुरु परताप साध की संगति, जोग जुक्ति उर भरै।
इँगला पिँगला सुखमन सोधै, ज्ञान अगिन उदगरै§ ॥२॥

*बान। †घट। ‡उपमा। §जगावै।

चाँद सुरज एकागर* करि कै, उलटि उरध अनुसरै।
नाद बिंद को जोहु† गगन में, मन माया तध मरै ॥३॥
आठ पहर नौबत धुनि बाजैं, नेक पलक नहिं टरै।
भीखा सब्द सुनतहिं अबुध बुध, अमरख‡ हरख करै॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

मन तोहिं कहत कहत सठ हारे।
ऊपर और अंतर कछु औरै, नहिं बिस्वास तिहारे ॥१॥
आदिहिं एक अंत पुनि एकै, मद्धहुं एक बिचारे।
लबज लबज एहवर ओहवर करि§, करम दुइत करि डारे
बिषया रत परपंच अपरबल, पाप पुन्न परचारे।
काम क्रोध मद लोभ मोह कब, चोर चहत उँजियारे ॥३॥
कपटी कुटिल कुमिति बिभचारी, हो वा को अधिकारे।
महा निलज कछु लाज न तो को, दिन दिन प्रति मोहिं जारे ॥४॥
पाँच पचीस तीन मिलि चाह्यो, बनलिउ‖ बात बिगारे।
सदा करेहु बैपार कपट को, भरम बजार पसारे ॥५॥
हम मन ब्रह्म जीव तुम आतम, चेतन मिलि तन खारे।
सकल दोस हमको काहे दइ, होन चहत है न्यारे ॥६॥
खोलि कहों¶ तरंग नहिं फेर्‌यो, यह आपुहि महिमा रे।
बिन फेरे कछु भयो न ह्वै है, हम का करहिं बिचारे ॥७॥

*इकट्ठा। †ढूंढ़। ‡गुस्सा, रंज। §लफ़्ज़ों को इधर उधर करके। ‖बनी हुई। ¶कभी।

हमरी रुचि जग खेल खेलौना, बालक साज सँवारे।
पिताअनादि अनख* नहिं मानहि, राखत रहहि दुलारे८
जप तप भजन सकल हैं बिरथा, ब्यापक जबहिं बिसारे।
भीखा लखहु आपु आतम कहँ, गुनना तजहु खमा† रे॥९

॥ शब्द १३ ॥

हे मन राम नाम चित धौबे‡।

काहे इत उत धाइ मरतु है। अवसिक भजन राम
कै कौबे§ ॥१॥
गुरु परताप साध की संगति, नाम पदारथ रुचि से खौबे।
हर दम सोहं सब्द उठतु है, बिमल बिमल धुनि गौबे॥२
सुरतिनिरति अंतर लौ लावै, अनहद नाद मगन घर जौबे।
रमता राम सकल घट ब्यापक, नाम अनंत एक ठहरौबे ३
तहाँ गये जग सों जर‖ टूटे, तीनि ताग गुन औगुन नौ¶ बे।
जनम अस्थान खानपुर बुहना**, सेवत चरन
भिखानंद चौबे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सजनी कौल कै सोच मोहिं लगो रहत दिन रजनी॥टेक॥
इन पाँचो परपंच चलायो पाप पुन्न की लदनी।
आयो नफा लेन दियो टूटो†† मरत बहुत तेहि लजनी‡‡।
हरिजन हरि चरचा नित बाँटहिं ज्ञान ध्यानकी ददनी§§ १

* नाराज़ी। † भीतर घुसी या छिपी हुई। ‡ धर। § कर। ‖ जड़। ¶ तीन गुनों का तागा अर्थात सत, रज, तम, और नौ औगुन अर्थात पाँच भूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, और चार बिषय अर्थात आसा, मनसा, ईर्षा, बिरोध। ** आज़मगढ़ के ज़िले में एक गाँव का नाम जहाँ भीखा साहब पैदा हुए थे। †† घाटा। ‡‡ लाज। §§ पेशगी दाम।

मनुवाँ इमिल धुमिल* में अरुझेव छूटलि नाम महजनी† २
जगन्नाथ जग बिदित सकल घट ब्रह्म सरूप बिरजनी‡।
खासा आपै आपु न परखत बिषै बिसाहत§ ममनी‖ ३
अंदर की प्रभु सब जानत धौं काह मैाज मेरी वमनी¶।
कोर** तनिक जेहिं ओर कृपा कियो
　　　　भीखा भाग तेहिं जगनी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

मन तुम लागहु सुद्ध सरूपे ॥ टेक ॥
तन मन धन न्यौछावरि वारो बेगि तजो भव कूपे ॥१॥
सतगुरु कृपा तहाँ लै लावो जहाँ छाँह नहिं धूपे ॥२॥
पइया††करम ध्यान सें फटको जोग जुक्ति करि सूपे ॥३॥
निर्मल भयो ज्ञान उँजियारो गुंग भयो लखि चूपे ॥४॥
भीखा दिव्य दृष्टि सें देखत सोहं बोलत मू पै ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

मन तुम छोड़हु सकल उदासी ।
राम को नाम तीर्थ घट ही में, दिल द्वारिका
　　　　औ काया कासी ॥१॥
करते जग अपने कर बाँधो, तिरगुन डोरि की फाँसी।
भिन्न भिन्न निज गुन बरतावहिं, काहू कै कछु
　　　　न सिरासी‡‡ ॥२॥

---

*मलीन ब्योहार। †महाजनी। ‡बिराजमान। §मोल लेता है। ‖ममता। ¶टेढ़ी। **तिरछी चितवन। ††खोखला धान, और पई एक कीड़े का भी नाम है जो अन्न में पड़ जाता है। ‡‡बस चलना।

तेहि तें कनक कामनी अरुझो, हरि सों सदा निरासी ।
अंतै नैन स्रवन अंतै है, रसना अंतै साँसी ॥३॥
ब्रह्म सरूप अनूप भूप बर, सोभा सुख की रासी ।
केवल आतम राम बिराजत, परमातम अबिनासी ॥४॥
अपरंपार अखंडित बानी, अकथ कथो नहिं जासी ।
सो परभाव प्रगट सतसंगति, जोग जुगत अभ्यासी ॥५॥
सतगुरु ज्ञान बान जेहिं मार्‍यो, लगी मरम उर गाँसी ।
घायल घुरमित* उलटि गयो त्यों चेतन उदित प्रकासी ६।
जग समुद्र नवका† नर देही, कनिहर‡ गुरु बिस्वासी ।
अमृत हरि को नाम सजीवन, चाखत छकि न अघासी७॥
बेद बेदांत संत मुख भाखहिं, धन्य जो नाम उपासी ।
मन क्रम बचन जु हरि रँग राते, तजे जगत उपहाँसी ॥८॥
जो एकै ब्यापक आतम तौ, को ठाकुर को दासो ।
ब्रह्म सरूप है साहब सेवक, दिब्य दृष्टि है खासी ॥९॥
अलख राम को लखै सोई जन, जो भ्रम भीति को ढासी§।
सोइ जोगी जोगेसुर ध्यानी, जा की रहनि अकासी ॥१०॥
हरि सों प्रीति निरंतर दिन दिन, छूटी भूख पियासी ।
सुरतिमिली अवलोकि निरति महँ, कहँ आवे कहँ जासी ११
त्यागि सकल परपंच बिषै हरि ताहि मिलै अन्यासी‖।
निरमोही निर्बान निरंजन, निरममतां सन्यासी ॥१२॥

* घूमता हुआ । † नाव । ‡ खेवट । § गिरा देवै । ‖ आप से आप ।

मोहनभोग सेख* लै बैठो, सुन्न में आसन डासी।
भीखा पावत† मगन रैन दिन, टाटक‡ होत न बासी॥१३॥

॥ शब्द १७ ॥

निज घर काहे न छावत मन तुम।
सिर पर काल कराल घटा लै,
तन को त्रास दिखावत ॥टेक॥
अनहद नाद गगन घहरानो आयुस§ समय जनावत।
हेइ होउ‖ आजु कालि दिन बीतत,
भ्रम बसि चेत न आवत ॥१॥
जब आयो तब का कहि आयो, जाहु तो का कहि जावत।
अगुवन¶ चेतु समय बीते पर, पाछे काम नसावत ॥२॥
सतसंगति करु ज्ञान को संग्रह सुरति निरति सुरझावत।
आतम राम प्रकास को छाजा, जम जल निकट न आवत३
जल भरि थल भरि पूरन उमग्यो, भाव रहस्य** बढ़ावत।
जहँ देखो तहँ रूपहि भासै, अपुहिं आपु दरसावत ॥४॥
घर में मैाज बाहर फिर मैाजै, मौजै मौज बनावत।
कह भीखा सब मौज साहब की, मौजी आपु कहावत ॥५

॥ शब्द १८ ॥

जो कोउ या बिधि हरि हिय लावै।
खेती बनिज चाकरी मन तें, कपट कुचाल बहावै ॥१॥

---

* गुरु, मुर्शिद। † खाता है। ‡ ताज़ा। § ज़िन्दगी। ‖ इस उस काम में। ¶ आगे से। ** आनन्द।

या बिधि करम अधर्म करतु है, ऊसर बीज बोवावै।
कोटि कला करि जतन करै जो, अंत सो निरफल जावै २
चौरासी लच्छ जीव जहाँ लगु, भ्रमि भ्रमि भटका खावै।
सुरसरि* नाम सरूप की धारा, सो तजि छाँहि† गहावै ॥३
सतगुरु बचन सत्त सुकिरित सों, नित नव प्रीति बढ़ावै।
भीखा उमग्यो सावन भादों, आपु तें आपु समावै ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

निज रँग रातहु हो धनियाँ‡ ।
तजि लोक लाज कुल कनियाँ§ ॥टेक॥
या में भला कछुक हमरिउ,
तुम्हरे सँग सदा रहनियाँ ।
भजनो सही तबहिं परि है,
जब सकल करम भ्रम भनियाँ‖ ॥१॥
मैं अपनी उत्पति परलै दुख,
कहँ लग कहौं अनगिनियाँ ।
जो इत के सुख बिष सम जानै,
सो उत साध परनियाँ¶ ॥ २ ॥
नहिं तौ जल बुंद होइ बिनसहुगे,
अबला** बुद्धि नदनियाँ ।
हरि बिनु सब रँग उतरि जाहिंगे,
मनि मोती कर पनियाँ ॥ ३ ॥

* गंगा जी । † प्रतिबिंब, छाईं । ‡ स्त्री । § लाज । ‖ नष्ट होना । ¶ भागना । ** स्त्री ।

अनमिल मिलै बहुत हरखै,
ज्यों पाइ मगन मनि फनियाँ * ।
मनुष जन्म बड़ भाग मिलो,
गुरु ज्ञान ध्यान कै बनियाँ ॥ ४ ॥
जोगहिं कोल्हु जुगत लै पेरो,
बिषै सकल कर घनियाँ ।
या हरि रस को पियत कोई कोइ,
खोदि† दुइत को छनियाँ ॥ ५ ॥
व्यापक जहाँ तहाँ लग साहब,
जक्त बिदित दिल जनियाँ ।
मन भयो ब्रह्म जीव नहिं दोसर,
अबिगति अकथ कहनियाँ ॥ ६ ॥
हर दम नाम उठत अभि अंतर,
अनुभव मधुर बचनियाँ ।
सुनत सुनत दिल मौज जगी,
लगी सुरति निरति उनमुनियाँ ॥ ७ ॥
साहब अलख को कौन लखै,
सब थके देव मुनि जनियाँ ।
राजा राम सरूप आतमा,
दृष्टि मिली पिय रनियाँ ॥ ८ ॥
होइ निरास आसा सब त्यागै,
सो केवल निरबनियाँ ।

* साँप । † खोदी, तिनका और किनका ।

कह भीखा धनि भाग ताहि जेहिं,
लाभ नहीं कछु हानियाँ* ॥ ९ ॥

॥ शब्द २० ॥

समुझि गहो हरिनाम,
मन तुम समुझि गहो हरिनाम ॥ टेक ॥
दिन दस सुख यहि तन के कारन,
लपटि रहो धन धाम ॥ १ ॥
देखु बिचारि जिया अपने,
जत† गुनना गुनन बेकाम ॥ २ ॥
जोग जुक्ति अरु ज्ञान ध्यान तें,
निकट सुलभ नहिं लाम‡ ॥ ३ ॥
इत उत की अब आसा तजि कै,
मिलि रहु आतम राम ॥ ४ ॥
भीखा दीन कहाँ लगि बरनै,
धन्य घरी वहि जाम§ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

राम सों करु प्रीति हे मन, राम सों करु प्रीति ॥ १ ॥
राम बिना कोउ काम न आवे,
अंत ढहो जिमि भीति‖ ॥ २ ॥
बूझि बिचारि देखु जियँ अपनो,
हरि बिन नहिं कोउ हीति¶ ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल के चरन कमल रज,
धरु भीखा उर चीति ॥ ४ ॥

---

*हानि, घाटा । †जितना । ‡दूर । §पहर । ‖दीवार । ¶मित्र ।

॥ गुरु और नाम महिमा ॥

॥ शब्द १ ॥

बीते बारह बरस उपजी राम नाम सों प्रीति ।
निपट लागि चटपटी मानो चारिउ पन गये। बीति ॥ १ ॥
नहिं खान पान सोहात तेहिं छिन बहुत तन दुर्बल हुवा ।
घर ग्राम लाग्यो बिषम* धन मानो सकल हारो है जुवा ॥ २ ॥
ज्यों मृगा जूथ† से फूटि परु चित चकित ह्वै बहुतै डरो ।
ढुंढ़त ब्याकुल बस्तु जनुकै‡ हाथ सें कछु गिरि परो ॥ ३ ॥
सतसंग खोजो चित्त सों जहँ बसत अलख अलेख ।
कृपा करि कब मिलहिंगे दहुं§ कहाँ कैाने भेष ॥ ४ ॥
कोउ कहेउ साधू बहु बनारस भक्ति बीज सदा रह्यौ ।
तहँ सास्त्र मत को ज्ञान है गुरु भेद काहू नहिं कह्यौ ॥ ५ ॥
दिन दोय चारि बिचारि देख्यों भरम करम अपार है ।
बहु सेव पूजा कीरतन मन माया रत ब्योहार है ॥ ६ ॥
चल्यों बिरह जगाय छिन छिन उठत मन अनुराग ।
दहुं§ कौन दिन अरु घरी पल कब खुलैगो मम भाग ॥ ७

* जो सहा न जाय । † झुंड ‡ जैसे । § धैां, न मालूम ।

बहु रेखता अरु कबित साखी सब्द सों मन मान ।
सोइ लिखत सीखत पढ़त निसु दिन करत हरि गुन गान ८
इक ध्रुपद बहुत बिचित्र सूनत भोग* पूछेउ है कहाँ ।
नियरे भुरुकुड़ा ग्राम† जाके सब्द आपे है तहाँ ॥ ९ ॥
चोप लागी बहुत जाय के चरन पर सिर नाइया ।
पूछेउ कहा कहि दियो आदर सहित मोहिं बैसाइया १०
गुरु भाव बूझि मगन भयो मानो जन्म कौ फल पाइया ।
लखि प्रीति दरद दयाल दरवे‡ आपनो अपनाइया ११
आतमा निज रूप साँचो कहत हम करि कसम कै ।
भीखा आपे आपु घट घट बोलता सोहमस्मिकै§ १२

॥ शब्द २ ॥

मनुवाँ सब्द सुनत सुख पावै ॥ टेक ॥
जेहिं बिधि धुधुकत नाद अनाहद तेहिं बिधि सुरत लगावै ॥ १ ॥
बानी बिमल उठत निसु बासर नेक बिलंब न लावै २
पूरा आप करहि पर कारज नरक तें जीव बचावै ३
नाम प्रताप सबन के ऊपर बिछुरो ताहि मिलावै ४
कह भीखा बलि बलि सतगुरु की यह उपकार कहावै ५

---

* आख़िरी कड़ी जिस में बनाने वाले का नाम रहता है। † नाम एक गाँव का जहाँ गोविन्द साहब का स्थान था जिन से भीखा साहब ने उपदेश लिया। ‡ प्रसन्न हुए। § सोहं अस्मि=वह मैं हूं।

॥ शब्द ३ ॥

मनुवाँ नाम भजत सुख लीया ॥ टेक ॥

जन्म जन्म कै उरझनि पुरझनि समुझत करकत हीया।
यह तौ माया फाँस कठिन है का धन सुत बित* तीया† ।१
सत्त सब्द तन सागर माहीं रतन अमोलक पीया।
आपा तजै धसै सो पावै ले निकसै मरजीया‡ ॥ २ ॥
सुरति निरति लौलीन भयो जब दृष्टि रूप मिलि थीया§।
ज्ञान उदित कल्पद्रुम को तरु‖ जुक्ति जमावो बीया॥३
सतगुरु भये दयाल ततच्छिन¶ करना था सो कीया।
कहै भीखा परकासी कहिये घर अरु बाहर दीया**॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

धुनि बजत गगन महँ बीना।
जहँ आपु रास रस भीना ॥ टेक ॥

भेरी†† ढोल संख सहनाई, ताल मृदंग नवीना।
सुर जहँ बहुतै मौज सहज उठि, परत है ताल प्रबीना॥१
बाजत अनहद नाद गहागह, धुधुकि धुधुकि सुर झीना।
अंगुली फिरत तार सातहुं पर, लय निकसत झिन भीना‡‡२
पाँच पचीस बजावत गावत, निर्त चारु§§ छबि दीना।
उघटत तननन धिन्तां धिन्तां, कोउ ताथेइ थेइ तत
कीना ॥ ३ ॥

---

*धन। †त्रिया, स्त्री। ‡समुद्र में डुबकी लगा कर मोती निकालने वाला। §थिर हुआ। ‖पेड़। ¶तुर्त। **चिराग़। ††एक बाजे का नाम। ‡‡झीनी झीनी। §§सुन्दर।

बाजत जल तरंग बहु मानो, जंत्री जंत्र कर लीन्हा।
सुनत सुनत जिव थकित भयो, मानो ह्वै गयो सब्द
अधीना ॥ ४ ॥

गावत मधुर चढ़ाय उतारत, रुनझुन रुनझुन धीना*।
कटि किंकिनि पगु नूपुर की छबि, सुरति निरति
लौलीना ॥५॥

आदि सब्द ओंकार उठतु है, अटुट रहत सब दीना†।
लागा लगन निरंतर प्रभु सों, भीखा जल मन मीना ६

॥ शब्द ५ ॥

गुरु सब्द सरोवर घाट सुनत मन चुभुकैला‡॥टेक॥
पाँच पचास गुन गावहीं, ह्वाँ ताल मृदंग उबाट,
कछुक झुन घुमकैला।§ ॥ १ ॥
गगन मँडल में रास रचो, लगि दृष्टि रूप कै साँट‖,
देखत मन पुलकैला ॥ २ ॥
नाद अनाहद खान खुलो जब, सुन्न सहर में हाट,
धुधुकि धुन धुधुकैला ॥ ३ ॥
भीखा के प्रभु बैठे देखत, भाव सहज सुख खाट,
मगन मन हुलसैला ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

गुरु दाता छत्री सुनि पाया।
सिष्य होन द्विज¶ जाचक आया ॥ १ ॥

---

*ताधिन ताधिन। †सब दिन यानी सदा एक रस रहता है। ‡डुबकी लगाता है। §गुंकार की आवाज़ आती है। ‖मिलाप, लपेट। ¶भीखा साहब जाति के ब्राह्मण थे और उन के गुरू गुलाल साहब छत्री।

देखत सुभग* सुंदर अति काया ।
  बचन सप्रेम दीन पर दाया ॥ २ ॥
बूझि बिचारि समुझि ठहराया ।
  तन मन सों चरनन चित लाया ॥ ३ ॥
दिन दिन प्रीति बढ़त गत माया† ।
  कृपा करहिं जानहिं निज जाया‡ ॥ ४ ॥
साहब आपै आप निराल ।
  आतम राम को नाम गुलाल§ ॥ ५ ॥
सर्ब दान दियो रूप बिचारी ।
  पाय मगन भयो बिप्र‖ भिखारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिं डाहतु है मन माया ॥ टेक ॥
एकै सब्द ब्रह्म फिरि एकै, फिरि एकै जग छाया ।
आतम जीव करम अरुझाना, जड़ चेतन बिलमाया ॥१॥
परमारथ को पीठ दियो है, स्वारथ सनमुख धाया ।
नाम नित्य तजि अनितै भावै, तजि अमृत बिष खाया २
सतगुरु कृपा कोऊ कोउ बाचै, जो सोधै निज काया ।
भीखा यह जग रतो¶ कनक पर,कामिनि हाथ बिकाया ३

॥ शब्द ८ ॥

मेरो हित सोइ जो गुरु ज्ञान सुनावै ॥ टेक ॥
दूजी दृष्टि दुष्ट सम लागै, मन उनमेख** बढ़ावै ।
आतम राम सूछम सरूप,केहि पटतर†† दै समझावै ॥१॥

---

*सुभ अंग । †माया छूटती जाती है । ‡पुत्र । §भीखा साहब के गुरू का नाम । ‖ब्राह्मण । ¶मोहित हुआ । **तरंग । ††उपमा ।

सब्दप्रकासबिनाहिं* जोग बिधि, जगमग जोति जगावै।
धन्य भाग ता चरन रेनु ले, भीखा सीस चढ़ावै ॥२॥

॥ शब्द ९ ॥

जो सत सब्द लखावै सोइ आपन हित हेरा ॥ टेक ॥
यहि सिवाय परपंच कर्म बस, सकल दुष्ट भ्रम घेरा ॥१॥
ब्रह्म सरूप प्रगट घट घट में, अनचिन्हार सब केरा ॥२॥
जेहिं बिधि कहत बेदांत, संत मुख सो कहि
करत निबेरा ॥३॥
तन मन वार तिनहिं पर दीन्हो, पर्‌यो चरन बिच डेरा ४
भीखा जाहि मिलैं गुरु गोबिंद, वै साहब हम चेरा ॥५॥

॥ शब्द १० ॥

को लखि सकै राम को नाम ॥टेक॥
देइ करि कैाल करार बिसारो,
जियना बिनु भजन हराम ॥१॥
बरनत बेद बेदांत चहूं जुग,
नहिं अस्थिर पावत बिसराम ॥२॥
जोग जज्ञ तप दान नेम ब्रत,
भटकत फिरत भोर अरु साम ॥३॥
सुर नर मुनि गन पचि पचि हारे,
अंत न मिलत बहुत सो लाम† ॥ ४ ॥
साहब अलख अलेख निकट हों,
घट घट नूर ब्रह्म को धाम ॥ ५ ॥

*बग़ैर। †दूर।

खोजत नारद सारद अस अस,
जातु है समय दिवस अरु जाम ॥ ६ ॥
सुगम उपाय जुक्ति मिलबे की,
भीखा इह सतगुरु से काम ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

देह धरि जन्म बृथा गैलो ॥ टेक ॥
पाँच तत्त गुन तीनि संग लिये,
कबहिं न सरनागत अैलो ॥ १ ॥
साधु संग कबहूं नहिं कीन्हो,
माया बस सब दिन गैलो ॥ २ ॥
ऐसहि जन्म सिरात* रे प्रानी,
राम नाम चित नहिं कैलो ॥ ३ ॥
कियो करार नाम भजिबे को,
अनमिल ब्याह गवन भैलो ॥ ४ ॥
सतगुरु सब्द हिये महँ राखो,
हर दम लाभ उदै भैलो ॥ ५ ॥
भीखा को मन थीर होत नहिं,
सतगुरु सत्त पच्छ धैलो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

होहु सु केवल राम की सरन,
ना तौ जन्म औ फेरि मरन ॥ १ ॥
तीरथ ब्रत आदि देवा पूजन जजन,
सत नाम जाने बिना नर्क परन ॥ २ ॥

*बीतना।

सब्द प्रकास जाने नैन स्रवन,
गूंगा गुड़ को हिसाब कहै सो कवन ॥ ३ ॥
अलख के लखन को अजपा जपन,
अबिगति गतिन को अकथ कथन ॥ ४ ॥
देह न ग्रेह आदि कर्म करन,
पुरुष पुरान जाको बिदित बरन ॥ ५ ॥
भीखा जल थल नभ रमता रमन,
ताके मिलिबे को गुरु कह्यो सो जतन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

नामै चाँद सूर दिन राती। नामै किरतिम* की उतपाती† १
नाम सरसुती जमुना गंगा। नामै सात समुद्र तरंगा ॥२॥
नामै गहिर अगूढ़ अथाह। असरन सरन को चरन निबाह३
मूल गायत्री ओअंकार। तत तुरिया पद सूच्छम सार॥४॥
पलक दरियाव पुरो हरिनाम। नामै ठाकुर सालिगराम५
सिव ब्रह्मा मुनि सबको नायक। बीठल नाथ साहब सुखदायक ॥ ६ ॥
नामै पानी नामै पवना। ररंकार मंगल सुख रवना‡ ॥७॥
नामै धरती नाम अकास। नामै पावक तेज प्रकास ॥८॥
नाम महादेवन को देवा। नामै पूजा करता सेवा ॥९॥
नाम जक्त गुरु नामै दाता। नामै अज§ बिज्ञान बिधाता१०
नाम सुमेर महा गभीर। नामै पारस मलयागीर ॥११॥
नाम असोक सोक सों रहिता। कल्पद्रुम नामहिं को कहिता ॥ १२ ॥

* माया। † उत्पत्ति। ‡ बिलास। § ब्रह्मा।

नामै रिद्धि सिद्धि को करता। नामै कामधेनु ह्वै भरता॥१३॥
नामै अर्ध उर्ध ह्वै आये। चारि खान में नाम समाये॥१४॥
धनराज धनंजै धर्महुं ओई। नामै अगन गनै का कोई॥१५
नामै प्रानायाम कहाये। सोहं सोहं नामै गाये॥ १६॥
नामै सुंदर नूर जहूर। नामै लाये निकट हजूर॥ १७॥
नाम अनादि एक को एक। भीखा सब्द सरूप अनेक॥१८॥

॥ जोगी और जोगीश्वर महिमा ॥

॥ शब्द १ ॥

भजन तें उत्तम नाम फकीर।
छिमा सील संतोष सरल चित दरदवंद पर पीर॥ टेक॥
कोमल गदगद गिरा* सोहावन प्रेम सुधा रस छीर।
अनहद नाद सदा फल पायो भोग खाँड़ घृत खीर १
ब्रह्म प्रकास को भेख बनायो नाम मेखला चीर।
चमकत नूर जहूर जगामग ढाँके सकल सरीर॥ २॥
रहनि अचल अस्थिर कर आसन ज्ञान बुद्धि मति धीर।
देखत आतम राम उघारे ज्यों दरपन मद्धे हीर॥३॥
मोह नदी भ्रम भँवर कठिन है पाप पुन्य दोउ तीर।
हरि जन सहजे उतरि गये ज्यों सूखे ताल को झीर† ४
जग परपंच करम बहतो है जैसे पवन अरु नीर।
गुरु गम सब्द समुद्रहिं जावे परत भयो जल थोर॥ ५॥
केलि करत जिय लहरि पिया सँग मति बड़ गहिर गँभीर।
ताहि काहि पटतरो‡ दीजै जिन तन मन दियो सीर॥६॥

* बानी। † छिछला पानी। ‡ उपमा।

मन मतंग मतवार बड़ो है सब ऊपर बल बीर ।
भीखा हीन मलीन ताहि को छीन भयो जस जीर ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु साहब नाम पारसी, पारस मीं चित लावै ।
जाहि नाम तें सिव सनकादिक, ब्रह्मा बिस्नु कहावै ॥१॥
ता के सुर नर मुनि गन देवा, सेवा सुमिरन ध्यावै ।
मध्य सरस्वति गंगा जमुना, सन्मुख सीस नवावै ॥२॥
त्रिस्ना राग द्वेस नहिं तहवाँ, जहवाँ सोहं खेलै ।
ज्ञान बोध बिनु द्रुष्टि बिलोकै, उर्ध कपाटहिं खोलै ॥३॥
मूल पेड़ अरु साखा पत्र नहिं, फूल बिना फल लागे ।
जंत्र बिना जंत्री धुनि सुनिये, सब्द अभय पद जागे ॥४॥
ता अस्थान मकान किये, होय नाद बिंद को मेला ।
आतम देह समान बिचारो, जोई गुरु सोइ चेला ॥५॥
सो है फाजिल संत महरमी*, पूरन ब्रह्म समावै ।
एकै सोन† बहुत बिधि गहना, समुझै द्वैत नसावै ॥६॥
ता को सरन साँच ह्वै जानहि, अजर अमर जन सोई ।
उटन बिटन‡ बरतन माटी को, चेतन मरे न कोई ॥७॥
अनुभव प्रेम उज्जल परमारथ, रूप अलग दरसावै ।
कह भीखा वह जागर्त जोगी, सहज समाधि लगावै ॥८॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु सब्द कवन गुन गुनी,
तहँ उठत लहरि पुनि पुनी ॥ टेक ॥

*भेदी । † सोना । ‡ बनना और बिगड़ना ।

पाँच घोड़ चंचल घट भीतर,
मन गयंद बड़ खुनी* ॥ १ ॥
ज्ञान अगिन तन कुंड सकल धरि,
जोग जुक्ति करि हुनी† ॥ २ ॥
सुरति निरति अंतर लै लावो,
गगन गरज धुनि सुनी ॥ ३ ॥
जन भीखा तेहिं पदहिं समानो,
धन‡ जोगेस्वर मुनी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सब महँ निज पहिचानी,
जग पूरन चारिउ खानी ॥१॥
अविगत अलख अखंड अमूरति,
कोउ देखे गुरुज्ञानी ॥२॥
ता पद जाय कोऊ कोउ पहुंचे,
जोग जुक्ति करि ध्यानी ॥३॥
भीखा धन‡ जो हरि रंग राते,
सोइ है साधु पुरानी ॥४॥

*हाथी रूपी मन बड़ा खूनी है। †होम । ‡धन्य ।

॥ बिनती ॥

॥ शब्द १ ॥

प्रभु जी करहु अपनो चेर ।
मैं तौ सदा जनम को रिनिया, लेहु लिखि मोहिं केर ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह यह, करत सबहिन जेर ।
सुर नर मुनि सब पचि पचि हारे, परे करम के फेर ॥२॥
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ऐसे ऐसे ढेर ।
खोजत सहज समाधि लगाये, प्रभु को नाम न नेर ॥३॥
अपरंपार अपार है साहब, होय अधीन तन हेर ।
गुरु परताप साध की संगति, छुटै सो काल अहेर* ॥४॥
त्राहि त्राहि सरनागत आयो, प्रभु दरवो† यहि बेर ।
जन भीखा को उरिन कीजिये, अब कागद जिन हेर ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

प्रभु जी नहिं आवत मोहिं होस ।
राम नाम मन में नहिँ आवत काकर करों भरोस ॥१॥
माला तिलक बनाय बहुत बिधि बिन बिस्वास कै तोस‡।
सुमिरन भजन साँच नहिँ कीन्हो मन माने को पोस ॥२॥
जोग जुक्ति गुरु ज्ञान ध्यान में लगै तजै तन जोस ।
यह संसार काम नहिँ आवै जैसे त्रृन पर ओस ॥३॥
खोजत सब कोइ अंत न पावै काला मैं का कोस§ ।
आतम राम सरूप निकट हीं माल सुंदर बड़ टोस ॥४॥

---

*शिकार। †दया कीजिये। ‡सामान। §अहं लिये हुए मालिक को ढूढ़ते हैं इस से उस तक नहीं पहुंचते—रास्ता काला कोस अर्थात बहुत लंबा हो जाता है।

भीखा को मन कपट कुचाली दिन दिन होइ फरमोस[*]।
कारन कवन सब्द होइ मेला यही बड़ा अपसोस ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

अस करिये साहब दाया ॥टेक॥
कृपा कटाच्छ होइ जेहि तें प्रभु, छूटि जाय मन माया॥१॥
सोवत मोह निसा निस बासर, तुमहीं मोहिं जगाया॥२॥
जनमत मरत अनेक बार, तुम सतगुरु होय लखाया॥३॥
भीखा केवल एक रूप हरि, व्यापक त्रिभुवन राया॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

सरनागत दीन दयाला की,
प्रभु करु आयसु[†] प्रतिपाला की ॥ टेक ॥
जो जिय महँ निस्चै आवै,
तौ संक[‡] कर्म नहिं काला की ॥१॥
ज्ञान ध्यान कहा जोग जुक्ति है,
चीन्ह तिलक अरु माला की ॥ २ ॥
जा पर होहु दयाल महा प्रभु,
धन्य भाग तेहि ताला[§] की ॥ ३ ॥
पिता अनादि कृपा करिकै,
अपराध छिमौ निज बाला की ॥ ४ ॥
भीखा मन परलाप[||] बड़ा
कहि साँच बजावत गाला की ॥ ५ ॥

[*] फ़रामोश, भूल । [†] आज्ञा । [‡] शंका, डर । [§] भाग्य, तक़दीर । [||] बकबाद ।

॥ शब्द ५ ॥

यार हो हँसि बोलहु मोसों,
भरम गांठि छूटै प्रभु तोसों ॥ १ ॥
पालन करि आये मो कहँ तुम,
खाय जियाय कियो घर पोसो ॥ २ ॥
बचन मेटि मैं कहौं गरज बसि,
दरदवंद प्रभु करौ न गोसो* ॥ ३ ॥
हो करता करमन के दाता,
आगे बुधि आवत नहिं होसो ॥ ४ ॥
तुम अंतरजामी सब जानो,
भीखा कहा करहि अपसोसो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

दीजै हो प्रभु बास चरन में, मन अस्थिर नहिं पास ॥१॥
हौं सठ सदा जीव को काँचो, नहिं समात उर साँस ॥२॥
भीखा पतित जानि जनि छोड़ो, जक्त करैगो हाँस ॥३॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिं राखो जी अपनी सरन ॥ टेक ॥
अपरम्पार पार नहिं तेरो काह कहौं का करन ॥१॥
मन क्रम बचन आस इक तेरी, होउ जनम या मरन ॥२॥
अबिरल भक्ति के कारन तुम पर, ह्वै ब्राम्हन देउँ घरन† ॥३॥
जन भीखा अभिलाख इहो नहिं, चहौं मुक्ति गति तरन ॥४॥

* गुस्सा, या फ़ारसी का लफ़्ज़ गोश जिस का अर्थ कान है। †धरना।

॥ शब्द ८ ॥

प्रभु दीन दयाल दया तु करो,
मन माया को उनमेख* हरो ॥ टेक ॥
बोलत अपरम्पार है साहब,
कपट अबिद्या भरम छरो† ।
पेट आन मुख आन बतावत,
यहि जग को परपंच जरो ॥ १ ॥
अधम-उधारन सोक-नसावन,
उदय-करावन नाम धरो ।
त्राहि त्राहि प्रभु सरन तिहारी,
यहि बाना को लाज करो ॥ २ ॥
रमिता राम सकल घट पूरन,
नैनन नूर जहूर झरो ।
भीखा केवल ब्रह्म बिराजत,
आतम फूल सरूप फरो ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

करुनामय हरि करुना करिये,
कृपा कटाच्छ ढरन ढरिये ॥ टेक ॥
भक्तन को प्रतिपाल करन को,
चरन कँवल हिरदै धरिये ॥ १ ॥
ब्यापक पूरन जहाँ तहाँ लगु,
रीतो‡ न कहूं भरन भरिये ॥ २ ॥

* कुचाल । † ठग लिया । ‡ ख़ाली ।

अब की बार सवाल राखिये,
नाम सदा इक फर* फरिये ॥ ३ ॥
जन भीखा के दाता सतगुरु,
नूर जहूर बरन बरिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

ए साहब तुम दीनदयाला ।
आयहु करत सदा प्रतिपाला ॥ १ ॥
केतिक अधम तरे तुम चरनन ।
करम† तुम्हार कहा कहि जाला‡ ॥ २ ॥
मन उनमेख§ छुटत नहिं कबहीं,
सौच‖ तिलक पहिरे गल माला ॥ ३ ॥
तनिकौ कृपा करहु जेहिं जन पर,
खुल्यो भाग तासु को ताला ॥ ४ ॥
भीखा हरि नटवर¶ बहु-रुपी
जानहिं आपु आपनी काला** ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तुम धनि धनि साहब आपे हो,
तहवाँ पुन्न न पापे हो ॥ टेक ॥
जत निरगुन तत सरगुन साँईं,
केवल तुम परतापे हो ॥ १ ॥

---

* फल । † बख़्शिश । ‡ कहा जा सकता है । § कुचाल । ‖ बदन की सफ़ाई, नहाना वग़ैरह । ¶ नट । ** कला, चरित्र ।

रमिता राम तुम अंतरजामी,
सोहं अजपा जापे हो ॥ २ ॥
अद्वै ब्रह्म निरंतर बासी,
प्रगट रूप निज ढाँपे हो ॥ ३ ॥
चहुं जुग किर्तकिर्त कीयो तुम,
जेहि सुकर* सिर थापे हो ॥ ४ ॥
भीखा सिसु† अवलंब‡ रावरो,
तुमहिं माय अरु बापे हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु राम नाम कैसे जानों, मन करत बिषै कुटिलाई।
काम क्रोध मद लोभ मोह तें, सवकस§ कबहुं न पाई ॥१॥
पाप पुन्न जुग‖ बिर्छ लगे हैं जन्म मरन फल पाई।
डार पात के फिरत फेर में चेतन नाम गँवाई ॥ २ ॥
जग परपंच को जाल पसारो चारिउ खान बझाई।
सोई बाचै याहि फंद से जेहि आपु से लेहिं छोड़ाई॥३॥
आरत¶ ह्वै जन बिनय करतु है सरन सरन गोहराई।
भीखा कहै कुफुर** तब टूटै जब साहब करहिं
सहाई ॥ ४ ॥

*जिस के सीस पर तुमने अपना सुन्दर हाथ धरा उसे चारो जुग में कृतार्थ कर दिया। †बालक। ‡सहारा§। सावकाश। ‖जुगल, दो। ¶दीन। **नास्तिकता।

प्रेम और प्रीति

॥ शब्द १ ॥

प्रीति की यह रीति बखानौ ॥ टेक ॥
कितनौ दुख सुख परै देँह पर, चरन कमल कर ध्यानौ १॥
हो चेतन्य बिचारि तजो भ्रम, खाँड़ धूरि जनि सानौ २॥
जैसे चात्रिक स्वाँति बुन्द बिनु, प्रान समरपन ठानौ ॥३॥
भीखा जेहिं तन राम भजन नहिं, काल रूप तेहिं जानौ४॥

॥ शब्द २ ॥

कहा कोउ प्रेम बिसाहन* जाय।
महँग बड़ा, गथ† काम न आवै, सिर के मोल बिकाय॥१
तन मन धन पहिले अरपन करि, जग के सुख न सोहाय।
तजि आपा आपुहिं ह्वै जीवै, निज अनन्य‡ सुखदाय ॥२॥
यह केवल साधन को मत है, ज्यों गूंगे गुड़ खाय।
जानहिं भले कहै सो कासों, दिल की दिलहिं रहाय।३॥
बिनु पग नाच नैन बिनु देखै, बिन कर ताल बजाय।
बिनसरवनधुनिसुनैबिबिधिबिधि,बिनरसनागुनगाय ४
निर्गुन में गुन क्योंकर कहियत, ब्यापकता समुदाय§।
जहँ नाहीं तहँ सब कुछ दिखियत, अँधरन की कठिनाय५
अजपा जाप अकथ को कथनो, अलख लखन किन पाय।
भीखा अविगति की गति न्यारी, मन बुधि
चित न समाय ॥ ६॥

---

*मोल लेना, ख़रीदना। †सोच समझ। ‡बे मिलौनी, केवल।
§सब जगह।

॥ शब्द ३ ॥

जब छूटे मन उनमेखा* निरदोखा सो ॥टेक॥

जग जानत अउरा बउरा,

तेहिं राग नहीं कहुं दोषा, जन मोषा† सो ॥१

वा कि गति बिपरीत सकल है,

नर कपूत कर लेखा, अस जोखा सो ॥ २ ॥

कहत सबै यह पेट लागि‡,

. कला करत धरि भेषा, तन पोषा सो ॥३॥

सो अपने साहब सों राजी,

प्रेम भक्ति कै रेखा, बड़ जोखा सो ॥ ४ ॥

हरि भक्तन अमृत फल चाख्यो,

पाइ गयो कहुं सेखा§, सुठि‖ चोखा सो ॥५

भीखा तेहिं जन की का कहिये,

जिन समझा अलख अलेखा, नहिं धोखा सो॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

पिया मोर बैसल¶ माँझ अटारी, टरै नहिं टारी ॥ टेक॥

काम क्रोध ममता परित्यागल,

नहिं उन सहल जगत कै गारी ॥ १ ॥

सुखमन सेज सुंदर बर राजित,

मिले हैं गुलाल भिखारी** ॥ २ ॥

---

*उपद्रव । †मुक्ति । ‡पेट के निमित्त । §शेख़, गुरू । ‖सुंदर ।
¶ बैठा । ** माँगुता अर्थात् भीखाजी को ।

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु अचरज बस्तु दिखाई, नैन सैन करि
जुक्ति बताई ॥ १ ॥
अबरन बरनन में नहिं आई, मरै जियै आवै
नहिं जाई ॥ २ ॥
सब्द त्रिगुन* कहि सके न सिराई, जहवाँ आपु
निरंजनराई ॥ ३ ॥
सचर अचर जल थल जित देखा, केवल एक
न दोसर भीखा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

मैं कहूं कौन जी हाल री, रूप अलख देखे बिना ॥टेक॥
जन्मत मरत अनेक बार तन,
फिरि फिरि मारत काल री ॥ १ ॥
जात चलो दम दाम सबै कछु,
नजरि न आवत माल री ॥ २ ॥
बिना मिलन अनमिल साहब सों,
कर मींजत धुनि भाल† री ॥ ३ ॥
थकित भयो मन बुद्धि जहाँ लगु,
कठिन पर्‌यो उर साल री ॥ ४ ॥

*बेद बचन । †सिर धुन कर ।

जम्यो* जुगति में गाछ† अनाहद,
धुनि सुनि मिटि जंजाल री ॥ ५ ॥
कली बैठि निज मूल सुरति पर,
लखि जन होत निहाल री ॥ ६ ॥
भीखा आतम फूल अजब,
गुरु राम को नाम गुलाल री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

ऐसो राम कवनि बिधि जानी ।
दृष्टि मुष्टि कबहीं नहिं आवत,
जनम मरन जुग बहुत सिरानी ॥ १ ॥
अगम अगोचर बसत निरंतर,
जा के सीस न पाँव न पानी‡ ।
निर्गुन निर्बिकार सुख सागर,
अपरम्पार अखंडित बानी ॥ २ ॥
ईसुर के केतहि§ ईसुरता,
साहब अविगत अकथ कथानी ।
अगह अकह अनभव अन मूरति,
थाके सकल खोजि मुनि ज्ञानी ॥ ३ ॥
अलख को लखे अदेख को देखे,
व्यापक पूरन चारिउ खानी ।
निरंकार निरुपाधि निरामय,‖
भीखा रंग न रूप निसानी ॥ ४ ॥

* उगा । † पेड़ । ‡ हाथ । § बहुत । ‖ निर्मोया ।

॥ शब्द ४ ॥

कोउ लखि रूप सब्द सुनि आई ॥ टेक ॥
अविगत रूप अजायब बानी, ता छबि का कहि जाई ॥१॥
यह तौ सब्द गगन घहरानो, दामिनि चमक समाई ॥२॥
वह तौ नाद अनाहद निसदिन, परखत अलख सोहाई ॥३॥
यह तौ बादर उठत चहूंदिसि, दिवसहिं सूर छिपाई ॥४॥
वह तौ सुन्न निरंतर धुधुकत, निज आतम दरसाई ॥५॥
यह तौ झरतु है बूंद झराझर, गरजि गरजि झरिलाई ॥६॥
वह तौ नूर जहूर बदन पर, हरदम तूर बजाई ॥ ७ ॥
यह तौ चारि मास को पाहुन, कबहुं नाहिं थिरताई ॥८॥
वह तौ अचल अमर की जै जै, अनंत लोक जस गाई ॥९॥
सतगुरु कृपा उभै* बर पायो, स्रवन दृष्टि सुखदाई ॥१०॥
भीखा सो है जन्म सँघाती, आवहि जाहि न भाई ॥११॥

॥ शब्द ५ ॥

ए हरि मीत बड़े तुम राजा
व्यापक जहाँ तहाँ लगु तुम्हरे,
हुकुम बिना कहुं सरे न काजा ॥ टेक ॥
तिरगुन सूबा मौज बनाया, भिन्न भिन्न तहँ फौज रखाया।
हय† गय‡ रथ सुखपाल बहूता, माया बढ़ी करै को कूता।
कहत बनै नहिं अनघड़ साजा, ए हरि मीत० ॥१॥

*दो। †घोड़ा। ‡हाथी।

चारोदिसाकनातगड़ाहै, असमान तंबू बिन चोबखड़ाहै।
पानी अगिनि पवन है पायक, जो कछु काम सो करिबे लायक।
अनहद ढोल दमामा बाजा, ए हरि मीत०॥ २॥
तारागन पैदल समुदाई, अज्ञा ले जहँ तहँ चलि जाई।
चाँद सूर निस बासर आई, आवतजातमसालदिखाई।
ध्रुव कियो थीर अचल मन धाजा*, ए हरि मीत० ॥३॥
सहजादा है मन बुधि काला, कीन्हेव सकल जगत पैमाला।
काल बड़ा उमराव है भारी, डरे सकल जहँ लग तन धारी।
तुम्हरी दंड सकल सिर ताजा, ए हरि मीत० ॥ ४॥
सत्त सतोगुन मंत्र दृढ़ावा, ज्ञान आदि दे पुत्र बुलावा।
अमल करहु तुम जग में जाई, फेरहु केवल राम दोहाई।
नाम प्रताप प्रकास को छाजा, ए हरि मीत० ॥५॥
चतुरंगिनि उज्जल दल देखा, जोग बिराग बिचार को लेखा।
छिमा सील संतोष को भाऊ, परमारथ स्वारथ नहिं चाऊ।
स्वारथ रत पर पारहु गाजा†, ए हरि मीत० ॥६॥

*ध्वजा। †जो स्वार्थी है उस पर बिजली गिराओ।

रज गुन तम गु कीन्ह्यो मेला, सबहीं भयो सतो-
गुन चेला ।
हम तुम आइ कछू नहिं कीन्हा, अज्ञा ईस सीस
पर लीन्हा ।
मरत बहुत डर आपु की लाजा, ए हरि मीत ० ॥ ७ ॥
पठयौ काम क्रोध मद लोभा, जातें कीन्ह सकल
तन छोभा ।
केवल नाम भजै सो बाचै, नहिं तौ ग्रैार सकल
मन काचै ।
भीखा तुम बिन कौन निवाजा*, ए हरि मीत बड़े
तुम राजा ॥ ८॥

॥ शब्द ६ ॥

बसु पुरुष पुरान अपारा, तब नहिं दूसर बिस्तारा ॥टेक
हफ़्तमें[†] इच्छा अविगत बोलै, सत्त सब्द निरधारा ॥१॥
छठयें ओअं अनहद तुरिया, पँचयें अकासहिं भारा ॥२॥
चौथे बायु सुन्न को मेला, तीजे तेज बिचारा ॥ ३ ॥
दूजे अप[‡] बीजा पैदाइस, कीन्ह चहै संसारा ॥ ४ ॥
भीखा मूल प्रथी को भाजन[§], ता में ले सब धारा ॥ ५ ।

॥ शब्द ७ ॥

बोलता साहब ले ले लोई, मिथ्या जगत सत्य इक वोई१
नाम खेत जन प्रीति कियारी, जीव बीज तापैर[‖] पसारी२
सेवा मन उनमुनी लगाया, ले ले जा जामलि[¶] गुरदाया३

---

*दया या पर्वरिश करना। [†]सातवाँ। [‡]पानी। [§]बरतन। [‖]छींट कर। [¶]उगी, जमा।

जोग बढ़नि जल बिषै दवाई, बिरही अंग जरद होइ आई ॥ ४ ॥
गगन गवन मन पवन फुराई, लोलो रंग परम सुखदाई॥५
सुरति निरति कै मेला होई, नाद औ बिंद एक सम सोई६
बाजत अनहद तूर अघाई, लोलो सुनत बहुत सुख पाई ७
अनुभव बालि* उदित उजियारा, आदि अंत मध एक निहारा ॥ ८ ॥
सुद्धसरूप अलख लख पाई, लोलो दरसन की बलि जाई ॥ ९ ॥
पाप पुन्न गत† कर्म निनारा, केवल आतम राम अधारा ॥ १० ॥
भीखा जेहिं कारन जग आये, लोलो जन्म सुफल करि पाये ॥ ११ ॥

आरती

(१)

गुरु गोबिंद की करत आरती ॥ १ ॥
दिन दिन मंगल सद बिहारती ॥ २ ॥
प्रेम प्रीति तन मनहिं गारती ॥ ३ ॥
जोग ध्यान दीपक सँवारती ॥ ४ ॥
बाती सुत सनेह बरि‡ डारती ॥ ५ ॥
सतगुरु बिरह अगिन उद्गारती§ ॥ ६ ॥

*बाल या फल। †रहित। ‡बट कर। §जगाती, बालती।

पाप पुन्न सब करम जारती ॥ ७ ॥
भाव धार भक्ती सों धारती ॥ ८ ॥
अभि अंतर हरि नाम उचारती ॥ ९ ॥
तजि बिषया रति चरन निारहती ॥ १० ॥
भीखा आरति सहज उतारती ॥ ११ ॥

(२)

हरि गुरु चरन किये परनाम ।
आरत जन पावहिं बिसराम ॥ १ ॥
सतगुरु किरपा हरि को नाम ।
भजन आरती आठो जाम ॥ २ ॥
सब्द प्रकास तिल के अस्थाम* ।
घट घट गुरु गोबिंद को धाम ॥ ३ ॥
ब्रह्म सरूप गोर नहिं स्याम ।
सुद्ध अकास नेर† नहिं लाम ॥ ४ ॥
सतगुरु जुक्ति करायो ठाम ।
भीखा आला दृष्टि मुकाम ॥ ५ ॥

(३)

नौबति ठाकुरद्वार बजावै,
पाँची सहित निरति करि गावै ॥ १ ॥
सतगुरु कृपा जाहि तेहि पासे,
आरति करत मिलन की आसे ॥ २ ॥

* स्थान । † पास ।

ज्ञान दीप परकास सोहाती,
दिव्य दृष्टि फेरत दिन राती ॥ ३ ॥
जाचक सुरति निरति पहँ जावो,
दान सरूप आतमा पावो ॥४॥
भीखा एक दुइत का भयऊ,
सर्प समाय रज्जु महँ गयऊ ॥ ५ ॥

(४)

आरति बिनै करत हरि भक्ता ।
सुजस रैन दिन सोवत जगता ॥ १ ॥
चित चेतन्न ब्रह्म अनुरक्ता* ।
धुनि सुनि मगन जीव आसक्ता† ॥ २ ॥
सुद्ध सरूप नूर लखि लगता ।
नाम समुद्र लहरि महँ पगता ॥ ३ ॥
बायें सो दहिने पछि सोइ अगता‡ ।
अर्ध उर्ध सम घटत न बढ़ता ॥ ४ ॥
सतगुरु ज्ञान भक्ति को दाता ।
पावत भीख भिखा जोइ जाता ॥ ५ ॥

॥ बारह मासा ॥

कोटि करै जो कोय, सतगुरु बिन प्रभु ना मिलैं ॥ टेक ॥
मास असाढ़ जन्म सुभ, बादर अलप सुभाव ।
करम भरम जल अंतर, प्रभु सों परल दुराव§ ॥ १ ॥

*अनुराग से परिपूर्ण । †बिह्वल । ‡पीछे सोई आगे । §दूरी ।

सावन सहज सोहावन, गरजै औ घहराय ।
बुंद झलाझलि झलकै, हरि बिनु कछु न सोहाय ॥ २ ॥
भादों भवन भयंकर, सुनि रैनी उतपात ।
कहिं कहिं दमकै दामिनी, डरपत है बहु गात ॥ ३ ॥
मास कुवार अवधि दिन, बरखा बरखि सिराय ।
नैन निमिख* नाहीं लगै, सिर धुनि धुनि पछिताय ॥४॥
कातिक मास उदासित, सुरति चललि परदेस ।
निरति मिलन के कारन, कब धौं मिटहिं कलेस ॥ ५ ॥
अगहन मास जु ध्यान धन, खेती करत किसान ।
नाम बीज लव लावै, बोवै सो लवै† निदान ॥ ६ ॥
पूस जु मास हवाल है, जाड़ जाड़ नियराय ।
ओढ़न जब हरि मिलन को, आनँद प्रेम अघाय ॥७॥
माघ मास जु बसंत रितु, फुल्यो काया बन झारि ।
सगुन सँजोग बिबिधि तन, मिलि है देव मुरारि ॥८॥
फागुन मास जु राग रँग, गुरु के बचन अस्थूल ।
नाद बिंद इक सम भयो, जीव सीव करि मूल ॥ ९ ॥
चैत मास निर्मल तनै, द्रुम‡ नव पल्लव§ लेत ।
रूप अरुन‖ मृदु¶ सकल है, निज आतम छबि देत ॥१०॥
बैसाख मास फल पूरन, जोग जुक्ति प्रनयाम** ।
द्रृष्टि उलटि कै लगि रहो, निसु दिन आठो जाम ॥११॥
जेठ बिषम तप भजन को, केवल ब्रह्म बिचार ।
कह भीखा सोइ धन्न है, जेकर नाम अधार ॥ १२ ॥

*छिन मात्र । †काटै । ‡पेड़ । §पत्ती । ‖लाल । ¶कोमल । **प्राणायाम ।

॥ हिँडोलना ॥

हिँडोला माया ब्रह्म को सँग, नाम बोलता अंग ॥टेक॥
स्वारथ परमारथ दोऊ, गाड़ो खंभ बनाय ।
निर्बिर्ति औ परबिर्ति यहि बिधि, डोरि बाँधि बँधाय॥१॥
झूलहिं संत असंत दोउ, अज्ञ तज्ञ* बिचार ।
ये झूलहिं बिषया रत, वे नाम के हितकार ॥ २ ॥
ये झूलहिं काम क्रोध सँग, मेर तोर अघाय ।
वे झूलहिं जोग जुक्ति से, मन ज्ञान ध्यान लगाय ॥३॥
ये झूलहिं सुत दारा सहित, मगन बारम्बार ।
वे झूलहिं सुद्ध सरूप सँग, दिन दिन रँग उजियार॥ ४ ॥
ये झूलहिं जग जंजाल डूबे, फिकिरि उद्यम लाय ।
वे झूलहिं द्वैत मिटाय यहि बिधि, छीर नीर बिलगाय ॥५
ये झूलहिं प्रन औ पच्छ लिहे, जाति कुल ब्यौहार ।
वे झूलहिं अबरन बरन तजि, सतगुरु चरन आधार॥६॥
ये झूलहिं कोट झराय खंदक, सराजाम सँवारि ।
वे झूलहिं इंद्री करत निग्रह, सुरति निरति सँभारि ॥७॥
ये झूलहिं सब हथियार हय गय†, लोग बाग तुमार‡ ।
वे झूलहिं प्रान अपान इक ह्वै, नाद के झनकार ॥ ८ ॥
ये झूलहिं पूत सपूत के सँग, मान बड़ाई जोहि ।
वे झूलहिं आतम राम मिलि कै, छोट सब से होहि ॥९॥
ये झूलहिं पाप औ पुन्न फिरि फिरि, मरन धरि औतार ।
वे झूलहिं भीखा त्यागि तन को, आपु मिलि करतार ॥१०

* अज्ञान और ज्ञान । † घोड़ा हाथी । ‡ तूमार, फैलाव ।

(२)

सतगुरु नावल सब्द हिँडोलवा, सुनतहिं मन अनुरागल।१।
झूलत गुनत रुचित भावल, जियरा चकित उठि जागल।२।
करम भरम सब त्यागल, कपट कुचालि मन भागल ॥ ३॥
झूलत चेतन चित लागल, अनहद धुनि मन रातल ॥ ४॥
भीखा जो याहि मत मातल, पासा दाँव पायो तिनमाँगल५

(३)

आदि मूल इक रुखवा* ता में तिनि† डार।
ता बिच इक अस्थूल है साखा बहु बिस्तार ॥ १ ॥
अबरन बरन न आवही छाया अपरम्पार।
माया मोह व्यापक भयो झूले वार न पार ॥ २ ॥
सतगुरु नावल हिंडोलवा सुरति निरति गहि सार
झूलहिं पाँच सोहागिनि गावहिं मंगलचार ॥ ३ ॥
पौंढ़्यो अगम हिंडोलवा सत्त सब्द निर्धार।
झुलत झुलत सुख ऊपजै केवल ब्रह्म बिचार ॥ ४ ॥
अब की बार यह औसर मिलै न बारम्बार।
फिर पाछे पछिताइबो देँह छुटे बेकार ॥ ५ ॥
जोग जुक्ति कै हिँडोलवा अनहद झनकार।
जो यहि झुलहि हिँडोलवा ताहि मिलहि करतार ॥ ६ ॥
आवा गवन निवारहू फिरि न होय औतार।
साधु सँगति को मेला झूलहिं नाम अधार ॥ ७ ॥

*पेड़। †तीन।